ISSN : 2393-8358

UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR)
Impact Factor : 6.0

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 10, No. 12.1 December, 2023

PEER-REVIEWED JOURNAL

Impact Factor : 6.0
ISSN : 2393-8358

विषय सूची

❧	Feminist Concern in Shashi Deshpande's A Matter of Time **Dr. Arbind Kumar Yadav**	1-5
❧	Deconstructing Myths in the Shiv Trilogy: Unveiling Layers of Meaning **Monika Dewedi**	6-12
❧	Marginalization of Women in the Tales from Firozsha Baag of Rohinton Mistry **Dr. Raghuvendra Bahadur Singh**	13-18
❧	Reservation for Transgender Community: A Legal Paradigm **Shambhu Sharan**	19-20
❧	Unveiling the Subaltern: Exploring the Representation of women in *Such A Long Journey* and *A Fine Balance* **Sunil**	21-28
❧	लोक देवों की प्रतिमाओं पर लोक कला का प्रभाव **डॉ0 रानी शर्मा**	29-31
❧	गोगी सरोज पाल : नारी–सम्बन्धित चित्रों के सन्दर्भ में **विनीता देवी**	32-36
❧	के0वी0 जेना के व्यक्तित्व में मूर्तिशिल्प की अवधारणा **डॉ0 प्रफुल्ल चन्द्र राव भारती**	37-38
❧	सामान्य भूमि उपयोग–विकासखण्ड जखनियाँ का एक भौगोलिक अध्ययन **कुसुम यादव**	39-44
❧	The Evolving Canvas: How Technology and AI are Reshaping Art **Khursheed Zaihra**	45-50
❧	Research Plagiarism **Dr. Dharmendra Kumar Sonker & Priyanka Sonker**	51-56
❧	A Study of Capital Structure Determinants in Chemical Pharma and General Engineering Industries in India **Dr. Sanjeev Kumar Agrawal**	57-61
❧	Symbols in Ceramic Artifacts of the Middle Ganga Plain **Jyoti Kumari**	62-64
❧	Yoga: Panacea for Stress **Anuj Kumar Mishra**	65-68
❧	भारत में सामाजिक सुरक्षा एवं योजनाएं **शगुफ्ता जमील**	69-70
❧	Dasein: A Manifold of Quasi-Embodied Perception in Life-World **Abhinav Tiwari**	71-76
❧	The Influence of Religion on Social Values and Behaviour **Dr. Sanjeev Kumar Singh**	77-84

७	1991 के बाद भारत–अमेरिका सम्बन्धों में ट्रैक 2 कूटनीति की भूमिका **रंजीत कुमार एवं डॉ० जयकुमार मिश्र**	233-238
७	हिन्दी की आदिवासी कविता और दलित कविता का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन **डॉ0 परविंदर कौर**	239-241
७	नारी जीवन की अभिव्यक्ति : शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास 'औरत' के विशेष सन्दर्भ में **डॉ0 किरनदीप सिंह**	242-244
७	Natural Disasters Impact on Rural Women **Dr. Akhil Singh Parmar**	245-248
७	अट्ठारह पुराण एवं कथा संचार **विनय कुमार**	249-254

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal) Impact Factor : 6.0
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 10, No. 12.1, December, 2023 ISSN : 2393-8358

1991 के बाद भारत–अमेरिका सम्बन्धों में ट्रैक 2 कूटनीति की भूमिका

रंजीत कुमार
शोध छात्र, राजनीतिशास्त्र विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ०प्र०)
डॉ० जयकुमार मिश्र
शोध निर्देशक, राजनीतिशास्त्र विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर (उ0प्र0)

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद शीत युद्ध पूरी तरह से समाप्त हो गया। शीतयुद्ध के समाप्ति के दौर में ही भारत और अमेरिका के सम्बन्ध सुधर रहे थे। हालांकि सोवियत संघ के विघटन ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के क्षेत्र में अनेक अनिश्चिताओं को जन्म दिया जिनमे एक भारत–अमेरिका सम्बन्ध भी शामिल है 1990 के दशक में भारतीय आर्थिक नीति में बदलाव के परिणाम स्वरुप अमेरिका के साथ सम्बन्धों में सुधार देखने को मिला। भारत के आर्थिक उदारीकरण ने दोनों देशों ने अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों को नए सिरे से देखने को प्रेरित किया। भारत और अमेरिका दोनों देशों ने अपनी परंपराओ तथा विश्व के सबसे पुराने और सबसे बडे लोकतन्त्रों के रुप में अपने सम्बन्धों को मजबूत बनाया है। जब अमेरिका सरकार सोवियत संघ के विघटन के कारण उत्पन्न वैश्विक परस्थितियों से निपटने में व्यस्त था तो अमेरिकी नीति निर्धारकों का ध्यान भारत–अमेरिका सम्बन्धों के तरफ भी गया।

एशिया सोसायटी और कारनेगी एंडोमेन्ट फॉर इंटरनेशनल पीस ने एक रिपोर्ट बनाई जो भारत और अमेंरिका के बीच मजबूत और सहयोगात्मक सम्बन्ध विकसित करने की पहल पर जोर दिया। सोवियत संघ के विघटन के कुछ ही समय पहले भारत ने आर्थिक उदारीकरण की पहल की। 1991 में भारत ने महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार प्रस्तुत किया इसमें विदेश व्यापार, निवेश के प्रति आग्रह शामिल था और आर्थिक खुलेपन के कारण विदेशी व्यापारी समुदाय के लिए भारतीय बाजार (विशाल अध्ययन वर्ग वाला देश) का महत्व काफी बढ गया। तथा शीतयुद्ध के बाद राष्ट्रपति क्लिंटन का आर्थिक मुद्दों और अमेरिका के विदेश नीति पर बल देना आदि कारणों ने अमेरिका की भारत नीति को प्रभावित किया अमेरिका वाणिज्य विभाग ने विकासशील देशों के बड़े बाजारों की पहचान की जिससे अमेरिका अपने व्यापार एवं निवेश में वृद्धि कर सके इस दृष्टि से भारत उसके लिए सही स्थान (बाजार) था तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव के कार्यकाल के दौरान कई मुश्किलो के बावजूद दोनों देशों ने अपने द्विपक्षीय सम्बन्धों को आगे बढाया। मई 1992 में दोनों देशों की नौसेना ने संयुक्त अभ्यास किया।

प्रधानमंत्री नरसिम्हा राव ने मई 1994 में एक सप्ताह की अधिकारिक यात्रा पर वाशिंगटन अमेरिका गए इस यात्रा के दौरान आर्थिक मुद्दे मुख्य रुप से चर्चा में थे और उन्होने भारत और अमेरिका के बीच व्यापार एवं निवेश के क्षेत्र में सहयोग बढाने का काम किया। नवम्बर 1994 में अमेरिका के वाणिज्य उपमंत्री जेफरी मार्टन भारत की यात्रा की 1995 में अमेरिका रक्षा और वाणिज्य सचिवों की भारत यात्राओं के बाद कई प्रकार के समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए इस दौरान अमेरिकी वाणिज्य मंत्री रोनाल्ड ब्राउन ने भारतीय वाणिज्य मंत्री प्रणव मुखर्जी ने दोनों देशों के बीच वाणिज्य गठबंधन बनाने के लिए एक सहमती पत्र पर हस्ताक्षर किये।

जिसका उद्देश्य व्यापारिक सम्बन्ध बढाना और विचार विमर्श के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान करना था। इस यात्रा में वाणिज्य मंत्री रोनाल्ड ब्राउन के साथ 25 अमेरिकी बडी कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आए हुए थे जो भारत प्रवास के दौरान भारत के साथ 11 व्यापारिक समझौते किए। इस तरह आर्थिक आधार पर भारत–अमेरिका एक दूसरे के निकट आते गए और इस प्रकार अमेरिका भारत में पूँजी–निवेश का सबसे बड़ा स्त्रोत बना और भारत से सबसे अधिक निर्यातकर्ता भी अमेरिका ही है। 1995 के शुरु में ही अमेरिकी रक्षा मंत्री विलियन पेरी ने भारत की यात्रा की और भारत के रक्षा मंत्री के साथ रक्षा सहयोग के एक समझौते पर हस्ताक्षर किया गया जिससे दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग में वृद्धि हुई शीतयुद्ध के समाप्ती के बाद दुनिया में निर्णायक परिवर्तन देखने को मिला।

अमेरिका विश्व में एक मात्र सुपर पावर बनकर उभर और इस लिए यह भारत के राष्ट्रीय हितों के अनुकूल था। अमेरिका के साथ सम्बन्धों को सामान्य किया जाए। भारत ने भी वैश्विक आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई और बढ़ावा दिया। उस समय भारत की अर्थ–व्यवस्था आतंरिक रुप से बेहद कमजोर हो चुकी थी, इसीलिए भारतीय विदेश नीति में आर्थिक कूटनीति को प्रमुख स्थान दिया और अमेरिका ने भारत

को एक उभरते बाजार के रुप में देखा और भारत में अमेरिका द्वारा निवेश भी किया गया। आर्थिक रुप से दोनों देशों के बीच सम्बन्ध भी मजबूत हुए किन्तु परमाणु अप्रसार के मुद्दे पर अमेरिका एप0पी0टी0 व सी0टी0बी0टी0 पर हस्ताक्षर के लिए भारत पर दबाव बनाए हुए था 1991 में आर्थिक उदारीकरण के चलते अमेरिका के साथ कारोबारी सम्बन्धों में सुधार हुआ।

1997 में संयुक्त राष्ट्र महासभा सम्मेलन के दौरान अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन से मुलाकात की थी। 1998 में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने पोखरण में परमाणु परीक्षण करके पूरी दुनिया को हिलाकर रख दिया था इस परीक्षण के परिणाम स्वरुप इजराइल को छोड़कर लगभग पूरी दुनिया भारत के खिलाफ हो गई थी और अमेरिका सहित कई देशों ने भारत पर आर्थिक प्रतिबन्ध भी लगा दिया था इतना ही नही बल्कि अमेरिका ने भारत से अपने राजदूत को वापस बुला लिया था। इसके बाद कुछ समय तक दोनों देशों के बीच सम्बन्धों में काफी तनातनी रही।

वर्ष 2000 में अमेरिकी संयुक्त सत्र को सम्बोधित कर भारत और अमेरिका के बीच एक नये सम्बन्धों की शुरुआत किया। इसी साल अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भारत दौरा लिया और भारतीय राष्ट्रपति के0आर0 नारायणन से मिले और भारतीय संसद को सम्बोधित किया था ऊर्जा और पर्यावरण पर द्विपक्षीय समझौता हुआ 2001 के अंत तक अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश प्रशासन ने भारत पर सभी आर्थिक प्रतिबन्ध हटाने का फैसला लिया।

2002–2003 में भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अमेरिका दौरा किया और संयुक्त राष्ट्र महासभा सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति बुश से मुलाकात की। डॉ मनमोहन सिंह 2004 में संयुक्त राष्ट्र महासभा सम्मेलन के दौरान राष्ट्रपति बुश से मुलाकात– 2006 में राष्ट्रपति जॉर्ज डब्लू बुश ने भारत यात्रा की और प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से मिले तथा परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर हुआ।

2008 में भारत और अमेरिका के बीच सिविल न्यूक्लियर डील ने भारत और अमेरिका के बीच सम्बन्धों को और मजबूत किया, फिर 2005 और 2008 में अमेरिका दौरा किया। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 2008 और 2009 में G20 आर्थिक सम्मेलन में भाग लिया और 2010 में परमाणु सुरक्षा सम्मेलन में भी भाग लिया। 2010 में राष्ट्रपति बराक ओबामा ने मुम्बई में भारत–अमेरिका कारोबारी सम्मेलन को सम्बोधित किया। इसके बाद प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और राष्ट्रपति प्रतिभा देवी पाटिल से मुलाकात कर भारतीय संसद को सम्बोधित किया।

2010 में ही भारत और अमेरिका ने पहली बार इंडिया–यूएय स्ट्रेटेजिक डायलॉग की नीवं रख। इसी साल राष्ट्रपति बराक ओबामा ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की भागीदारी का समर्थन किया। 2011 में भारत और अमेरिका ने साइबर सिक्योरिटी के लिए एमओयू पर दस्तखत किए जो स्ट्रेटेजिक डायलॉक का ही हिस्सा है। 2014 में अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में भारतीय राजनीतिक देवयानी खोबरागडे की गिरफ्तारी विवाद के कुछ समय बाद भारत में अमेरिका राजदूत नैंसी पॉवेल ने इस्तीफा दे दिया था।

2014 में अमेरिका राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत के नये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उनकी जीत पर बधाई दी और अमेरिकी यात्रा पर बुलाया। 2015 में बराक ओबामा की दूसरी भारत यात्रा ने भारत और अमेरिका के सम्बन्धों को एक नया आयाम दिया भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका के साथ मिलकर दुनिया से आतंकवाद को खत्म करने और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के निर्माण के लिए कई समझौते किए तथा साथ ही जलवायु परिवर्तन, गरीबी, कुपोषण, मानवधिकार, जैसे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर साथ काम करने की सहमति बनाई 2017 में डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका के राष्ट्रपति बने तो भारत अमेरिका सम्बन्धों को अधिक मजबूती मिली। डोनाल्ड ट्रम्प का भारत के साथ रिश्ता शुरु से खास रहा।

ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ऐसे पहले विदेशी प्रधान मंत्री थे जो व्हाईट हाउस का दौरा किया था। नरेन्द्र मोदी ने अपनी अमेरिकी यात्रा में अनेक समझौते किये। वर्ष 2015 में लाजिस्टिक्स इजाफा मेमोरेडंम ऑफ एग्रीमेंन्ट और 2017 में भारत–अमेरिका सामरिक ऊर्जा भागीदारी जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर मुहर लगा। इसके बाद 2018 में संचार स्थिरता और सुरक्षा समझौता हुआ जो भारत को अमेरिका के अन्य रक्षा सहयोगी देशों की श्रेणी में ला दिया। इस समझौते के बाद अमेरिका भारत को गोपनीय संदेश वाले उपकरण मुहैया करा सकता है इस उपकरण के माध्यम से भारत अपने सैन्य अधिकारियो और अमेरिका के सैन्य अधिकारियो के बीच शांति या युद्ध के समय गोपनीय संवाद कर सकता है। 2019 आतंकवाद विरोध पर द्विपक्षीय संयुक्त कार्यदल की बैठक हुई और 2020 में भू–स्थानिक सहयोग अन्वेषण एवं सहयोग अनुबंध भी हुआ।

2019 में टेक्सस में हाउडी मोदी रैली हुई थी मोदी जी की उस रैली में ट्रंप को भी बुलाया गया था। इसी तरह 2020 में जब ट्रंप भारत आये तो अहमदाबाद में नमस्ते ट्रंप का भव्य आयोजन हुआ, जहा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जोरदार स्वागत किया था। फरवरी 2020 मं अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दो दिवसीय भारत यात्रा के बाद भारत–अमेरिका संबंधो को नई ऊर्जा मिली। इस यात्रा के दौरान दोनों देशो ने उर्जा, रक्षा और स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए। संयुक्त राज्य अमेरिका ने 2021 में भारत को दो साल के कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत का स्वागत किया तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार का समर्थन देने के साथ ही भारत को इस सदस्यता में शामिल कर लिया और 2021 में संयुक्त राज्य अमेरिका भारत में मुख्यालय वाले अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन में शामिल हो गया तथा वर्ष 2022 में संयुक्त राज्य अमेरिका एजेंसी फॉर इंटरनेशनल डेवलपमेंट में भी शामिल हुआ।

भारत और अमेरिका संयुक्त राष्ट्र, जी20, दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों का संगठन (आसियान) क्षेत्रीय मंच, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन जैसे पहलुओं पर सहयोग करते है वर्ष 2022–2023 में भारत–अमेरिका के बीच बढ़ते निवेश के परिणाम अमेरिका में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार बनकर उभरा है अमेरिका और भारत के व्यापारिक निवेश एवं कनेक्टिविटी के माध्यम से वैश्विक सुरक्षा, स्थिरता, तथा आर्थिक समृद्धि को बढावा देना दोनों देशों के हित में है।

1885 के बाद से, रीगन प्रशासन में नीति निर्माताओं ने ओपनिंग टू इण्डिया (भारत के लिए शुरुआत) शब्द का उपयोग शुरु कर दिया था। 1986 और 1987 में अमेरिकी रक्षा सचिव ने भारत का दौरा किया। उसके बाद 1988 में उनके उत्तराधिकारी फ्रेंक लार्लुची के भारतीय दौरे ने अमेरिका और भारत के संबंधो में आधार और घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने के संकेत दिये और भारत ने इस पर सहमति दिखाई।

इसके साथ 1989 में भारत–अमेरिका रक्षा सहयोग में एक नई शुरुआत हुई जब आधिकारिक संवाद के साथ ट्रैक 2 कूटनीति की पहल हुई। ट्रैक 2 कूटनीति या अनौपचारिक कूटनीति जिसे बैंक चैनल डिप्लोमेसी भी कहा जाता है। ट्रैक 2 कूटनीति में शिक्षाविदों, धार्मिक नेताओं, पूर्व राजनयिक अधिकारियों और गैर–सरकारी संगठनो और निजी नागरिक समूह, प्रबुद्ध मंडल, पत्रकार तथा प्रवासी आदि जैसे अभिनेताओं के बीच अनौपचारिक संवाद हैं जो विदेश नीति और कूटनीति के आधिकारिक प्रक्रिया में नए विचार और नए संबंध स्थापित करते हैं। ट्रैक 2 कूटनीति की एक सर्वव्यापी परिभाषा बहुत कम है ट्रैक 2 कूटनीति की प्रक्रियाओं में विभिन्न प्राकर के अभिनेता हो सकते है जो किसी सरकारी पदों पर ना हो तथा अधिकारिक पदों से पूरी तरह दूर हो लेकिन अपनी सरकारों के बहुत करीब हो और जो अपनी स्वयं की निजी कारणों से कार्य कर रहे हों, अक्सर ऐसे व्यक्तियों की पृष्ठभूमि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों और विश्व राजनीति के प्रति अच्छी पकड़ और विशेषज्ञ होते हैं।

1981 में एक अमेरिकी विदेश सेवा अधिकारी जोसेफ मान्टविल द्वारा " ट्रैक 2 कूटनीति " शब्द को गढ़ा गया। मॉन्टविल ने इस शब्द का पहली बार इस्तेमाल अनौपचारिक संघर्ष समाधान संवादों को दर्शाने के लिए किया गया था। ट्रैक 2 कूटनीति का कार्य रणनीति विकसित करने, जनमत को प्रभावित करने संघर्ष समाधान को हल करने वाले भौतिक संसाधनों को व्यवस्थित करने तथा राष्ट्रो के सदस्यो या विरोधी समूहों के साथ अनौपचारिक बातचीत करना और शांति स्थापना करना इत्यादि। शीतयुद्ध की समाप्ति के बाद और 1990 के दशक में ट्रैक 2 कूटनीति के विस्तार में महत्वपूर्ण प्रगति देखी गई। चूकि महाशक्ति प्रतिदृंद्विता द्वारा दबाए गए कई संघर्ष अचानक फूट पड़े और संघर्ष समाथान के लिए कई विद्वान अभ्यासकर्ता और गैर–सरकारी संगठन आदि इसे हल करने के लिए उभरे और अप्रत्यक्ष रुप से सरकारो ने सहयोग भी किया इस प्रकार शीतयुद्ध के बाद ट्रैक 2 कूटनीति में तेजी आयी।

भारत और अमेरिका के बीच 21वीं सदी के सबसे कूटनीतिक और परिणामी संबंधों में से एक है अमेरिका भारत के एक अग्रणी वैश्विक शक्ति और शांतिपूर्ण, स्थिर और समृद्ध भारत–प्रशांत क्षेत्र को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भागदारो के रुप में समर्थन करता है भारत और अमेरिका के बीच ट्रैक 2 कूटनीति निश्चित रुप से सम्बन्धों को और अधिक मजबूत करने का काम किया है ट्रैक 2 कूटनीति का विचार शीतयुद्ध के मध्य में ही शुरु हो गया था लेकिन इसकी उत्पत्ति 1981 में फॉरेन पॉलिसी में प्रकाशित एक लेख फ्रायड के अनुसार विदेश नीति में मिलती है इस लेख का सह–लेखक विलियन डी0 डेविडसन और जोसेफ वी मॉन्टविले जिन्हे आमतौर पर ट्रैक 2 कूटनीति शब्द का श्रेय दिया जाता है और ट्रैक 2 कूटनीति अनौपचारिक, गैर–संरचित बातचीत, हमेशा खुले विचारों वाला, अक्सर परोपकारी और रणनीतिक रुप से आशावादी, सर्वोत्तम मामलो के विश्लेषण पर आधारित होता है।

ट्रैक 2 कूटनीति के द्वारा विदेशो नीति राजनीतिक मूल्य और सांस्कृति को प्रभावित करती है और दोनों देशों को एक मंच साझा करती है इसी प्रकार भारत–अमेरिका संबंधो में ट्रैक 2 कूटनीति के द्वारा विश्व की महाशक्ति अमेरिका में भारतीय प्रवासियों का प्रभाव बढ़ा है इसका अनुमान वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है कि कैसे भारतीय प्रवासी अमेरिका में आई टी क्षेत्र में उच्च पदों पर और राजनीतिक, व्यापारिक तथा अन्य क्षेत्रों में परचय लहराया है।

अमेरिका में रहने वाले भारतीय लोगों को भारतीय–अमेरिकी कहा जाता है 1980 में अमेरिकी जनगणना ब्यूरो ने स्वदेशी अमेरिकियों से पार्थक्य के लिए एक अन्य शब्द एशियाई भारतीय गढा। अमेरिका में भारतीय प्रवासी वर्ग की संख्या लगभग 4.5 मिलियन है जो अमेरिका की जनसंख्या का लगभग 1 प्रतिशत है। अमेरिका में भारतीय प्रवासी वर्ग को सॉफ्ट पावर के स्त्रोत के रुप में संदर्भित करता है जो प्रभावी ट्रैक 2 कूटनीति के एक उपकरण के रुप में काम करता है भारतीय प्रवासी अमेरिका में मुख्य रुप से एच–1 बी बीजा के द्वारा परिवार–आधारित वरीयता और अस्थायी श्रमिक बीजा कार्यक्रम और क्षात्र प्रवेश कार्यक्रमो के माध्यम से जाते है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय प्रवासियों की एक बड़ी संख्या युवा, उच्च शिक्षित और विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, आई टी और चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत है अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढने वाला हर चौथा विदेशी छात्र भारतीय है भारतीय छात्रो में से 84 प्रतिशत से भी ज्यादा ने डॉक्टर विश्वविद्यालयों को चुना।

टेक्सास, न्यूर्याक कौलिफोर्निया, मेसानुसेट्स और इलिऑप वो राज्य है जहा विश्वविद्यालयों में सबसे ज्यादा भारतीय छात्रों को प्रवेश मिला। अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की अधिकतर आबादी कौलिफोर्निया (20 प्रतिशत) न्यू जर्सी (11 प्रतिशत) टेक्सास (9 प्रतिशत) न्यॅूयार्क (7 प्रतिशत) और इलि(7 प्रतिशत) और अमेरिका के सभी राज्यों में बसे हुए है। अमेरिका की जितनी भी बडी कंपनिया है उनके सीइओ भारतीय मूल के लोग है जो अमेरिकी अर्थव्यवस्था को गति देने के साथ उसके भविष्य को बदलने का दमखम रखते है दिग्गज अमेरिकी कंपनियों के भारतीय मूल के सीईओ पर प्रकाश डाले तो दुनिया की सबसे दिग्गज सर्च इंजन गूगल यानि अल्फा बेट की सीइओ सुन्दर पिचाई है माइक्रोसॉफ्ट के सीइओ सत्या नेडला, अरविन्द कृष्ण आदि भारतीय मूल के है यूटयूब की जिम्मेदारी भी भारतीय मूल के नील मोहन के पास है, इसके अलावा वर्ल्ड बैंक की कमान भारतीय मूल के सीइओ अजय बंगा के पास है।

अमेरिकी कंपनी नेटऐप, अमेरिकी फार्मा कंपनी नोवरटिस, स्टारबक्स हनीवेल कंपनियो के सीईओ भी भारतीय मूल के ही है। भारतीय अमेरिकी पूरी अमेरिकन इकोनामी पर कब्जा जमा रखा है यह कहना फेडेक्स कंपनी के फाउंडर और सीईओ फ्रेड स्मिथ ने एक बयान में कहा था। अमेरिकन इंडियन फाउंडेशन जो एक गैर–सरकारी संगठन है जो महिलाओं, बच्चो और युवाओं पर विशेष ध्यान देता है और भारत के वंचित लोगो के जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन एक धर्मनिरपेक्ष, उद्देश्य–संचालन प्रभाव विज्ञान ईकाई है। जो भारत में सामाजिक परिवर्तन और दो समुदायो के बीच संबंध स्थापित करने के लिए प्रतिबद्धता से संचालित है। जो दुनिया के दो सबसे बडे शक्ति शाली लोकतंत्र व दो सबसे बड़े नागरिक समाजों के बीच एक मजबूत पूल की तरह काम करता है।

भारतीय– अमेरिकी गैर– सरकारी संगठनों ने भारत में वंचित समुदायों में डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित करने के लिए 1 मिलियन डॉलर का फंड शुरु किया है। ग्रामीण भारत में शिक्षा और डिजिटल साक्षरता को बढावा देने की पहल, क्रिस्टन प्रोजेक्ट उम्मीद, टीच फॉर लाइफ, इंडिया डेवलपमेंट एंड रिलीफ फंड (आईडीआरएफ) गुरु कृपा फाउंडेशन और एस एम सहगल फाउंडेशन के साथ साझेदारी में शुरु की जा रही है। भारत में जमीनी स्तर पर एसएम सहगल फांउडेशन द्वारा लिये जाने वाल प्रोजेक्ट उम्मीद दूरदराज के गॉवो में डिजिटल लाइब्रेरी स्थापित करने के लिए नवीन प्रौद्योगिकी और बुनियादी ढांचे का लाभ उठाएगा। जिससे स्कूली बच्चो के साथ समुदाय के सदस्यों को कम्प्यूटर, इंटरनेट कनेक्टिविटी, शैक्षिक सॉफ्टवेयर और डिजिटल तक पहुँच प्रदान की जायेगी।

प्रोजेक्ट उम्मीद के दृष्टिकोण है कि हमारे साझा प्रयास सकारात्मक बदलाव लाएंगे और ग्रामीण भारत में व्यक्तियों और समुदायों के लिए स्थायी अवसर पैदा करेंगे। अमेरिका ने 33 शीर्ष भारतीय अमेरिका गैर लाभकारी संगठनो ने एक मार्च 2024 को इंडिया गिविंग डे में भाग लिया जिसका उद्देश्य भारत में महत्वपूर्ण सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों के लिए धन जुटाना होता है इंडिया फिलेन्त्रापी अलायंस गैर–सरकारी संगठनो का एक नेटवर्क है जो भारत में उच्च प्रभाव वाले विकास कार्यक्रमों के लिए अमेरिका में लोगों से धन जुटाता है। इंडिया फिलेन्थ्रापी अलांयस द्वारा आयोजित वार्षिक इंडिया गिविंग डे दूसरे संस्करण में भारतीय अमेरिकियो और अमेरिका में भारत के दोस्तों के बीच जागरुकता पैदा करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी

अभियान शुरु किया गया है– जो भारत में कई महत्वपूर्ण सामाजिक व आर्थिक कार्यक्रमों के लिए धन जुटाने और इस महत्वपूर्ण दिवस पर दान कर सकें।

अमेरिका में 2013 के बाद से राजनीति में भारतीयों की भूमिका बढती जा रही है पिछले 10 सालों में भारतीयो की राजनीति में भागीदारी बडी है और अमेरिका में लगातार राष्ट्रपति पद की दावेदारी बढ़ती जा रही है पहली बार 2012 में कौलिफॉर्निया से रिपब्लिक नेता और भारतवंशी नेता एमी बेश संसद पहुँचे थे। वर्तमान में कमला हैरिस सेनेट पहुँची जो अमेरिकी संसद के इस उच्च सदन में पहुँचने वाली और उपराष्ट्रपति पहली भारतवंशी नेता है भारत की तरह संयुक्त राज्य अमेरिका एक जीवंत और जटिल बहु धार्मिक लोकतंत्र है जब की एक सदी से अधिक समय से अमेरिकी समाज में भारतीयों की भूमिका बढती जा रही है पिछले कुछ सालो से ही भारत की कई आस्था परंपराए अमेरिका के धार्मिक परिदृश्य का व्यापक और महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई है।

निष्कर्ष

भारत और अमेरिका संबंधों में 1991 के बाद से महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है और लगातार दोनों देशो के संबन्ध विकसित हुए है शीतयुद्ध के बाद भारत की वैश्विक उदारीकरण और 1991 में प्रधानमंत्री नरसिंह राव के नेतृत्व में विदेश निवेश और उत्पादकों के लिए अर्थव्यवस्था का खोलना तथा अमेरिकी कंपनियो के लिए नए बाजार उपलब्ध करवाना आदि कारण भारत–अमेरिका संबंधों के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। 2005 में प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के नेतृत्व में भारत अमेरिका के बीच असैन्य परमाणु समझौता हुआ जो दोनों देशों के रिश्तों में एक परिवर्तन कारी पल था इसी दौरान, भारत अमेरिका के बोइंग और फ्रांस के एयरबस से विमानों का मुख्य खरीदार भी बन गया।

1991 के आर्थिक सुधार और 2005 का रणनीतिक प्रयास इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और डोनाल्ड ट्रंप की जुगल बंदी, हाउडी मोदी और नमस्ते ट्रंप आदि के अलावा अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और नरेन्द्र मोदी ने आर्थिक रणनीतिक संबंधो को एक नया आकार दिया। 1991 के बाद भारत अमेरिका सम्बन्धों में ट्रैक 2 कूटनीति का अभूतपूर्व ढंग से विकास हुआ है 21 वीं शताब्दी में अमेरिकी समाज में एक आर्थिक और सामाजिक रुप से हिस्सा बनने में ट्रैक 2 कूटनीति के अभिनेताओं की अग्रणीय भूमिका रही है। भारतीय अमेरिकियों ने कई गैर–सरकारी संगठन और राजनीतिक कार्य समितियों की स्थापना की है इन संगठनो के द्वारा कानूनी अप्रवासन, व्यापारिक संबन्ध, वैश्विक स्वास्थ्य, धार्मिक स्वतंत्रता, आतंकवाद के खिलाफ आवाज, और शिक्षा आदि मामलों को संभालती है अमेरिका में भारतीय मूल के चालीस लाख लोग, जो इनकी जनसंख्या को 1 प्रतिशत ही है लेकिन कर में योगदान 6 प्रतिशत का देते है और भारत में रहने वाले 7 लाख से अधिक अमेरिकी नागरिक जिन्होने यहाँ पूंजी और कौशल लगाया है। भारतीय मूल के नागरिक अमेरिका के प्रतिष्ठित शीर्ष कंपनियों का नेतृत्व कर रहे है भारत और अमेरिका सम्बन्धों में समद्ध सभ्यता और सांस्कृतिक पहल विश्वास और स्नेह में बदला है भारतीय प्रवासियो के द्वारा गैर– सरकारी सार्वजनिक राजनयिकों और सांस्कृति राजनयिको के माध्यम से दोनों देशों के समाजिक, आर्थिक राजनीतिक में योगदान दे रहे है।

सन्दर्भ सूची :

- भारत– अमेरिका संम्बन्धो में भारतीय प्रवासियों का योगदान लेखकः मधुलिका बनिवाल, प्रकाशित : 26 अक्टूबर 2018 भारतीय वैश्विक परिषद, सत्रू हाउस, नई दिल्ली
- शीतयुद्ध के बाद भारत–संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बन्धों का विश्लेषण/वैश्वीकरण की दुनिया में भारत की विदेश नीति josh badhao manish varma
- https:// joshbadhao. Com/ शीतयुद्ध–के–उपरांत–भारत– स।
- भारत–संयुक्त अमेरिका (India –USA) अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, विजन आई.ए.एस
- www.visionias.in
- भारतीय विदेश नीति के बदलते प्रतिमान, संपादकः अजय मोहन श्रीवास्तव, राम अवतार, जगदीश पी. वर्मा प्रत्युश पब्लिकेशन, बी– 57ए, गली नं0 15 पश्चिम कारवाल नगर दिल्ली
- ISBN- 978-93-82171-93-5
- भारत–अमेरिका संबंध Hindi. Indian wire.com / विषय / भारत–अमेरिका संम्बन्ध।
- भारत –अमेरिका सम्बन्ध : इतिहास के आइने में 25 सितम्बर 2014, बी बी सी न्यूज हिन्दी Bbc.com/hindi/ India/ 2014/09/140925-india –us relations history – aj-vr

- भारत–अमेरिका सम्बन्ध 29 फरवरी 2020 अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, दृष्टि द विजन, नई दिल्ली dristias.com / hindi / lokshabha – rajyasabha – discussions/ india – America- relation
- भारत – अमेरिका सम्बन्ध : आने वाले "टैकेड" के बारे में बताएगी विश्वास पर आधारित एक साझेदारी लेखक: गौतम चिकरभाने, प्रकाशित 14 जुलाई, 2023 ORF (OBSERVER RESEARCH FOUNDATION)
- भारत– अमेरिका रिश्तो पर पीएम मोदी ने लिखा एक नया अध्याय, स्पादक: रमेश मिश्रर, प्रकासित : 25 सितम्बर 2021 जागरण प्रकाशन लिमटेड
- भारत– सावजनिक संबंनध अन्तर्राष्ट्रीय संबंध, दृष्टि द विजन, नई दिल्ली https: // www. Dristi IAS. Com/ hindi / daily- updatis / daily –news analysis / india us – relations-3
- Track two diplomacy in theoy and practice piter jons toreword by George p. Shultz Stanford university press Stanford California ISBN- 13: 978-08047- 9624-8
- भारत की विदेश नीति, पुनरावलोकन एवं संभावनाएँ संपादक– सुमित गांगुली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा भारत में प्रकाशित 2/11 भूतल अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, भारत ISBN- 978-0-19-948518-6
- भारत–अमेरिका सम्बन्ध (1991 से 2021) : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन डॉ० प्रमोद कुमार, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, एल०एन०एम०एस० कालेज बीरपुर, सुपौल Indian Streams Research Journal, ISSN No: 2230&7850, Impact factor : 5.1651 (VIF), volum -11/Issue/January-2022
- वैश्वीकरण की दुनिया में भारत की विदेश नीति ईकाई–5, अमेरिका के प्रति भारत की नीति डॉ० ग्रुप गुड़गाँव, हरियाणा, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।